

## जल प्रदूषण और पर्यावरण

प्रा. शैलेश बाबुराव पाटील

समाजकार्य महाविद्यालय,  
चोपडा, जि. जलगांव

### जल प्रदूषण का प्रभाव :

आज जल प्रदूषण खतरनाक स्तर तक पहुंच चुका है और व्यापक रूप से जीवन को प्रभावित कर रहा है। घरेलू तथा औद्योगिक दोनों ही कारणों से लगातार जल प्रदूषित होता जा रहा है। घरों में साबुन, सोडा, ब्लीचिंग पाऊडर एव डिटरजेंट का अत्याधिक प्रयोग या उद्योगों में धात्विक, अम्ल, क्षार या लवण के प्रयोग से जल प्रदूषित हो रहा है। भारत में जल प्रदूषण सबसे गंभीर पर्यावरण संबंधी खतरों में से एक बनकर उभरा है। इसके सबसे बड़े स्रोत शहरी सीवेज और औद्योगिक अपशिष्ट हैं जो बिना शोधित किए हुए नदियों में प्रवाहित किए जा रहा है। सरकार की तमाम कोशिशों के बावजूद शहरों में उत्पन्न कुल अपशिष्ट जल को केवल 10 प्रतिशत हिस्सा ही शोधित किया जा रहा है, और बाकी ऐसे ही नदियों, तालाबों एवं महासागरों में प्रवाहित किया जा रहा है। तीव्र औद्योगिकरण ने भी जल प्रदूषण की समस्या निश्चित रूप से खतरनाक स्तर तक पहुंचा दिया है। साथ ही, कृषि में प्रयुक्त कीटकनाशकों एवं रासायनिक उर्वरकों ने भी जल प्रदूषण की समस्या को बढ़ाने में अपना योगदान किया है। जल प्रदूषण की समस्या से मानव तो बुरी तरह प्रभावित होते की है, जलीय जीव जन्तु, जलीय पादप तथा पशु पक्षी भी प्रभावित होते हैं। खास तौर पर कुछ समुद्री हिस्सों एवं नदियों में तो जल प्रदूषण की वजह से जलीय जीवन समाप्तप्राय हो चुका।

### विषाक्त पदार्थों में वृद्धि :

जल प्रदूषण की वजहसे गंगा नदी, जिसे हिन्दुओं की पतित पावनी कहा जाता है, अत्याधिक प्रदूषित हो चुकी है। वैसी ही हालात यमुना, गोमती, चम्बल तथा झेलम नदियों के भी हैं। आज अगर भारत की हुगली नदी संसार की सबसे प्रदूषित जल स्रोतों में से एक मानी जाती है तो इसकी वजह भी जल प्रदूषण ही है। लखनौ की गोमती नदी में कारखानों द्वारा छोड़े गए प्रदूषित जल से नदी का जल एक समय इतना विषाक्त हो गया था की जल के उपर मरी हुई मछलियां तैरती दिखाई देती थीं।

### जल प्रदूषण का प्रभाव रू जलीय पौधों के वृद्धि पार प्रभाव

जलीय पौधे गंभीर रूप से जल प्रदूषण की वजह से प्रभावित हो जाता है। प्रदूषित जल काई की अधिकता होने से सूर्य का प्रकाश गहराई तक नहीं पहुंच पाता जिससे जलीय पौधों की प्रकाश संश्लेषण क्रिया और उनकी वृद्धि प्रभावित होती है। प्रदूषित जल में प्रदूषकों के कारण कुछ जलीय खरपतवार जैसे – जलीय फर्न एवं जलीय हाईसिंथ की वृद्धि हो जाती है मल दू युक्त जल में कवक, शैवाल, बेक्टिरिया आदि तेजीसे बढ़ना शुरू हो जाता है।

### जलीय जन्तुओं पर जल प्रदूषण के दुष्प्रभाव :

समुद्री क्षेत्रों में बढ़ता जल प्रदूषण खतरनाक स्थिती तक पहुंच गया है। जलीय जीव-जन्तुओं पर प्रदूषित जल का बहुत बुरा प्रभाव पडता है। जल प्रदूषण से जल में काई की अधिकता हो जाती है तथा ऑक्सिजन की कमी हो जाती है। एक सर्वेक्षण के अनुसार ज्यादातर नदियों के जल के एक लीटर में ऑक्सिजन की मात्रा इस समय 0.9 घन से.मी.रह गई है जबकी 9६४० में औसतन यह २.५ घन सेमी थी। जल प्रदूषण से प्रभावित होने वाले जीव जन्तुओं में मछलियों की कई प्रजातियां सम्मिलित हैं। महासागरों में तैलीय पदार्थों, हाईड्रो कार्बन के सागरीय सतह पर फैल जाने की वजह से जलीय जीवों को ऑक्सीजन नहीं मिल पाता और वे मर जाते हैं। हालात इतने चिंताजनक हो चुके हैं कि कई जलीय जीवों की प्रजातियां समाप्तीके कगार पर हैं।

प्रदूषित जल, जलीय जीवों की, प्रजनन शक्ति पर भी नकारात्मक प्रभाव डालता है। यह मछलियों एवं पौधों में प्रजनन की क्षमता में कमी ला रही है। इसके अलावा, जानवर प्रदूषित जल पीने की वजह से कई प्रकार के रोगों से ग्रसित हो रहे हैं।

### खत्म हो रही है प्रकृति की सुंदरता :

दुषित जल न केवल पीने के लिए बल्की कृषि प्रयोजनों के लिए अनुपयुक्त है। साथ ही, प्रदूषित जल की वजह नदियों एवं झिलों की सुंदरता भी खत्म हो रही है।

### जल प्रदूषण का मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव :

प्रदूषित जल का सबसे भयंकर प्रभाव मानव स्वास्थ्य पर पडता

है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार संपूर्ण विश्व में प्रतिवर्ष एक करोड़ पचास लाख व्यक्ति प्रदुषित जल के कारण मृत्यु के शिकार हो जाते हैं तथा पांच लाख बच्चे मर जाते हैं। भारत में प्रति लाख लगभग ३६० व्यक्तियों की मृत्यु हो जाती है और अस्पतालों में भर्ती होने वाले रोगियों में से ५० फिसदी रोगी ऐसे होते हैं जिनका कारण प्रदुषित जल होता है। अविकसित देशों की स्थिति और भी बुरी है और यहां ८० प्रतिशत रोगों की जड़ प्रदुषित जल है।

#### **विभिन्न रोगों के प्रसार के लिए जिम्मेदार :**

रोगाणु, विषाक्त पदार्थ एवं पानी में लवण की अनावश्यक मात्रा कई बीमारियों को जन्म दे रही है। विश्वभर में 80 प्रतिशत से भी अधिक बीमारियों का कारण सीधे या परोक्षरूप से प्रदुषित जल ही है। एक अनुमान के अनुसार भारत के 34000 गांवों के लगभग 2.5 करोड़ व्यक्ति हैजा से पीड़ित हैं। राजस्थान के आदिवासी गांवों के एक लाख नब्बे हजार लोग गंदे तालाबों का पानी पीने के कारण विभिन्न बीमारियों से पाड़ित हैं। प्रदुषित जल में अनेक प्रकार के रोगकारक जीवाणु होते हैं जिनसे अनेक प्रकार की बीमारियां फैलती हैं वैज्ञानिकों के अनुसार भारत में सर्वाधिक रोग मल द्वारा प्रदुषित पेय जल से होता है। प्रदुषित जल से पोलियो, हैजा, पेचिस, पीलिया, मियादी बुखार, वायरल फीवर आदि बीमारियां फैलती हैं। प्रदुषित जल में शीसा भी पाया जाता है जिसे पीने से मनुष्यों को जोड़ों के दर्द, गुर्दा तथा हृदय रोग सहित तमाम बीमारियां हो जाती हैं।

जलजनित रोग संक्रमक होते हैं जो मुख्यतः प्रदुषित जल से फैलते हैं। हेपेटाईटीस, हैजा, पेचिश तथा टाईफाईड आम जलजनित रोग हैं, जिनसे उष्ण कटिबंधीय क्षेत्र के बहुसंख्यक रोग प्रभावित होते हैं। प्रदुषित जल के संपर्क से अतिसार, त्वचा संबंधी रोग, श्वास समस्याएं तथा अन्य रोग हो सकते हैं जो जल निकायों में मौजूद प्रदूषकों के कारण होते हैं। जल के स्थिर तथा अनुपचारित होने से मच्छर तथा अन्य कई परजीवी कीट आदि उत्पन्न होते हैं जो विशेषतः उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में बीमारियोंको फैलाते हैं।

बच्चे अक्सर प्रदुषित पानी पीने की वजह से बीमार हो जाते हैं और कई बार वे रोगों की तीव्रता के कारण मर भी जाते हैं। एक अनुमान के अनुसार भारत में दुषित पानी की वजह प्रति घंटे 13 बच्चे से प्रदुषित जल की वजह से होने वाली बीमारी डायरिया के कारण करज जाते हैं।

प्रदुषित जल मनुष्य के लिए जहर के समान ही है। पीने में क्लोराईड की अधिक मात्रा होने की वजह से रीढ़ की हड्डी जो टेढ़ी हो जाती है दांत पिले होकर गिरने शुरू हो जाते हैं। इसके अलावा लोगों की हाथ और पैर की हड्डीयां अपना लचीलापन खो देते हैं और उनका शरीर विकृत हो जाता है।

प्रदुषित जल की वजह से गुर्दे की बीमारियों का खतरा भी बढ़ जाता है। प्रदुषित जल में मौजूद सल्फाईड की एक बड़ी मात्रा विभिन्न सांस की बीमारियों का कारण है। पानी के जल में यूरिया की मात्रा बढ़ जाने की वजह से पेट के विकार भी हो जाते हैं। दुषित पेयजल की निरंतर सेवन से विभिन्न पेट संबंधी विकारों के साथ ही गले में गांठ, दंत क्षय, आदि कई अन्य रोग हो जाते हैं।

नाईट्रेट उर्वरक एवं भूमि में प्रयुक्त कई रसायन, अपशिष्टों का जहां-तहां बिखराव एवं गड्डे वाले शौचालयों से भुजल प्रदुषित हो जाता है। इस तरह के दुषित पेयजल के सेवन करने वाले बच्चों में हीमोग्लोबिन में ऑक्सिजन वहन करने की क्षमता में कमी आती है जिसकी वजह से उनकी मृत्यु हो जाती है। परमाणु विस्फोट से उत्पन्न रेडियोधर्मी पदार्थ भी जल प्रवाह द्वारा जलाशयों में पहुँच जाते हैं और पेय जल को प्रदुषित कर देते हैं। मनुष्य जब इस जल का उपयोग करता है तो ल्युकोमिया तथा कैंसर जैसे भयानक रोग हो जाते हैं। इस जल के प्रयोग से अपंग संतान होने का भी खतरा बढ़ जाता है।

#### **प्रदुषण की वजह से पेय जल असुरक्षित :**

जल प्रदुषण ही वजह से पीने का पानी बदबुदार एवं अरुचिकर हो जाता है। पानी में मौजूद सूक्ष्म जीव पानी के स्वाद को खराब कर देते हैं। जब प्रदुषित पानी में मौजूद जैविक पदार्थ मरने लगते हैं तो ये हायड्रोजन सल्फाईड एवं अमोनिया गौस बनाते हैं जो बहुत बुरी गंध पैदा करता है।

#### **औद्योगिक इकाईया भी हो रही है प्रभावित :**

औद्योगिक इकाईयो की क्षमता भी जल प्रदूषणकी वजह से कम हो जाती है। उदाहरण के तौर पर कानपूर का चमड़ा उद्योग गंगा के प्रदुषित पानी के उपयोग की वजह से प्रभावित हो गया है।

#### **जल निकायों का संदुषण :**

जल प्रदुषण से नदियां, झीले, समुद्र और भूमिगत जल आदि जल के भी निकाय दुषित हो जाते हैं और इसके लिए निश्चित

रूप से मानवीय गतिविधियां ही जिम्मेदार हैं। मानव अपने स्वार्थ के कारण नियम कानून को ताक पर रखते हुए विभिन्न फॅक्ट्रीयोंसे उत्पन्न विभिन्न हानिकारक तत्वों को भी जल के स्त्रोतों में प्रवाहित कर देते हैं। औद्योगिक अपशिष्ट में पाए जाने वाले हानिकारक तत्वों में नमक, विभिन्न रसायन, ग्रीज, तेल, पेंट, लोहा, कैडमीयम, सीसा, ओर्सेनिक, जस्ता, टिन इत्यादी शामिल हैं। यह भी देखा गया है कि कुछ औद्योगिक संगठन, रिडियो-एक्टिव पदार्थों को भी जल के स्त्रोतों में प्रवाहित करने से परहेज नहीं करते जो जीव और पौधों के लिए बेहद हानिकारक हैं।

पर्यावरण एवं वन मंत्रालय ने कुछ उद्योगों के रूप में चिन्हीत किया है – जैसे की मद्य उद्योग, पेट्रोरसायन उद्योग, चर्म शोधक उद्योग, उर्वरक उद्योग, औषधि उद्योग एवं चीनी उद्योग इत्यादी।

#### दिन-प्रतिदिन के जीवन पर प्रभाव :

प्रदूषित अम्लीय जल धातुओं से निर्मित जल संग्रह पात्रों को घोल देता है जिससे जल संग्रहण में बाधा आती है। प्रदूषित जल में मिश्रित क्षारीय पदार्थ बर्तनों तथा नलों में एकत्रित होकर उन्हें कमजोर बनाते हैं।

दूषित जल में रोगजनक जीवाणुओं की वजह से होने वाली बीमारी दूषित जल रोगजनक रोगाणुओं के वाहक होते हैं और इसलिए मानव स्वास्थ्य के लिए सबसे नुकसानकारक है। दूषित जल द्वारा उत्पन्न रोगों को निम्न लिखित मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया गया है।

- 1) वायरस द्वारा – पीलिया (पीत ज्वर), पोलियो, आंत्रशोध, जुकाम, संक्रमक, यकृत शोध, चेचक।
- 2) जीवाणुओं द्वारा – डायरिया, दस्ता, मियादी बुखार, तेज बुखार, हैजा, काली खांसी, सुजाक, उपदंश आंत्रशोध, पेचिश, तपेदिक।
- 3) प्रोटोजोआ द्वारा – मसुडों में पायरिया, पेचिश, नार्कोलेप्सी (महामारी इन्सेफेलाईटिस), मलेरिया अमबाईसिस, जिआरडाईसिस।
- 4) कीड़ों द्वारा – फाईलेरिया, हाईटिडसिस्ट एवं कृमि रोग की एक किस्म (विभिन्न प्रकार के पेट के कीड़े होना)।
- 5) लेप्टोस्पाईरोसीस बीमारी – हमारे शरीर में रोग पैदा करने वाले विभिन्न जीवाणुओं के अलावा, विभिन्न प्रकार के विषाक्त पदार्थ जल के माध्यम से हमारे शरीर में पहुंच

कर नुकसान पहुंचाते हैं। इन विषाक्त पदार्थों में मुख्य रूप से कैडमियम, सीसा, निकल, चांदी, अर्सेनिक, आदि सम्मिलित हैं।

- 6) प्रदूषित जल में लोहा, मँगनिज, कैल्शियम, बेरियम, तांबा, बरोनी नाईट्रेट सल्फेट, बोरेट, कार्बोनेट आदि लवणों की अधिक मात्रा मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। जल में मैग्नीशियम सल्फेट की अधिकता से आंतों में जलन होती है।
- 7) बच्चों के शरीर में प्रदूषित जल के फलस्वरूप नाईट्रेट की अधिकता से रोग मेथेमोग्लोबिनेमिया नामक बीमारी हो जाती है जो आंतों में पहुंचकर पेट का कैंसर उत्पन्न करता है। प्रदूषित जल में फ्लोरिन की अधिकता होती है जिसके सेवन से फ्लोरोसिस नाम की बीमारी हो जाती है।

#### जल प्रदूषण को कैसे नियंत्रित करें :

जल सभी जिवित प्राणियों के जीवन का आधार है। आधुनिक मानव सभ्यता के विकास के साथ, जल प्रदूषण की गंभीर समस्या उत्पन्न हो गई है। औद्योगिकरण एवं शहरीकरण की प्रवृत्ति बढ़ रही है। गावों के अंदर एवं आसपास तेजी से विभिन्न उद्योगों की स्थापना के साथ ही वे तेजी से कस्बों एवं शहरों में तब्दील होते जा रहे हैं जिससे जल संसाधनों का अत्याधिक दोहन एवं प्रदूषण हो रहा है। शुरू में जब विभिन्न प्राद्योगिकीयों का विकास नहीं हुआ था तो लोग प्रकृति की गोद में रहते हुए जीवन का आनंद लेते थे, लेकिन तेजी से हुए विकास एवं औद्योगिकरण के उद्भव के साथ ही जल प्रदूषण खतरनाक स्तर तक पहुंच गया है।

शहरों में अत्याधिक आबादी होने के कारण बड़ी संख्या में प्लौटों के निर्माण की प्रवृत्ति बढ़ रही है, ताकि ज्यादा से ज्यादा जनसंख्या को आवास उपलब्ध कराया जा सके क्योंकि एक प्लैट में तीन लोगों का परिवार आसानी से रह सकता है। हालांकि, इन प्लैटों में पानी की आवश्यकता बहुत होती है और इस वजह से वहां भूमिगत जल भंडार पद दबाव बढ़ रहा है। वहां डीप बोरिंग निर्माण किया जाता है और भूमिगत जल का दोहन बड़े पैमाने पर किया जा रहा है। अनियंत्रित बोरिंग व तटीय क्षेत्रों में भूजल की अत्याधिक निकासी के फलस्वरूप खारा पानी बाहर निकल कर जमीन पर फैल सकता है जिससे जल की आपूर्ति भी प्रदूषित हो सकती है।

### जल प्रदूषण को कम करने के तरिकेजल प्रदूषण को रोकने के लिए उठाए जा सकनेवाले कदम

उद्योगों के अत्याधिक निर्माण से उनसे निकलने वाले दुषित जल, बचे हुए रासायनिक कचरे आदि को नालियों के रास्ते नदियों में बहा दिया जाता है। घरों में रहने वाले लोगों के दैनिक गतिविधियों द्वारा उत्पन्न अपशिष्टों को भी नदियों में प्रवाहित किया जा रहा है जिससे नदियों का जल अत्याधिक प्रदूषित होता जा रहा है। यदि हमें जल प्रदूषण को नियंत्रित करना है तो हमें इस समस्या का कोई समाधान निकालना होगा और इसके लिए हमें कानून भी बनाने होंगे एवं साथ ही रणनीतिक चिंतन भी करना होगा।

#### जल प्रदूषण को कैसे नियंत्रित करें :

हमें जल प्रदूषण रोकने के सभी कानूनों का कड़ाई से पालन करना चाहिए। वैधानिक व्यवस्थाएँ जैसे—जल अधिनियम 1974, प्रदूषण का निवारण और नियंत्रण और पर्यावरण सुरक्षा अधिनियम 1986 जैसे कानून तो हैं लेकिन उन्हें प्रभावपूर्ण ढंगसे कार्यान्वीत नहीं किया जा रहा है इसलिए हमें जल प्रदूषण के प्रभावी रोकथाम के लिए इन कानूनों को कड़ाई से लागू कराना होगा। जल उपकरण अधिनियम 1977 एक अन्य महत्वपूर्ण कानून है जिसका उद्देश्य प्रदूषण कम करना एवं उसकी प्रभावी रोकथाम करना है। हालांकि इस कानून का प्रभाव सीमित ही रहा है। कानूनों के अलावा जलप्रदूषण के हानीकारक प्रभावों से जनताको परिचित कराना एवं उन्हें जागरूक किया जाना आवश्यक है ताकि जल प्रदूषण की समस्या का प्रभावी समाधान निकाला जा सके।

#### जिम्मेदारी के साथ व्यवहार करना होगा :

कोई उद्योग अपने अपशिष्टों का बिना शोधित हुए इधर उधर फेंक देते हैं जो बारिश के पानी के माध्यम से बहते हुए नदियों में पहुँच जाते हैं। औद्योगिक कचरे द्वारा जल प्रदूषण न फैले इसके लिए इन अपशिष्टों का उचित निपटारा आवश्यक है। कुछ उद्योग कचरे के निपटारे संबंधी सभी नियमों का पालन करते हैं और वे औद्योगिक अपशिष्टों को या तो पुरी तरह नष्ट कर देते हैं या इसे सुरक्षित रूप से दुबारा उपयोग करते हैं।

ईन नियमों के साथ-साथ उद्योगों के लिए यह भी आवश्यक है कि वे विनिर्माण कार्य द्वारा हो रहे जल प्रदूषण को रोकने के लिए अपने कार्य के तरिकों में परिवर्तन लाए एवं सभी संबंध

गत मानदंडों का पालन करें। सभी उद्योग इन नियमों को पालन नहीं कर रहे हैं और उनमें से ज्यादातर कचरों को सिध्द नदियों में प्रवाहित कर रहे हैं जो जल प्रदूषण से संबंधित एक खतरनाक परिदृश्य है। ये सभी अपशिष्ट अंततः मनुष्यों एवं जानवरों को प्रभावित करते हैं।

**जहरिले कचरे का उचित निपटान :** जहरिले कचरे का निपटान के सही तरिकों को अपनाना बेहद महत्वपूर्ण है। जिन फैक्ट्रीयों में पेंट्स, साफ सफाई और दाग मिटाने वाले रसायनों का इस्तेमाल किया जाता है, वहाँ से निकलने वाले अपशिष्ट एवं पानी का सुरक्षित निपटान बेहद जरूरी है। कार या अन्य मशीनों से होनेवाले तेल के रिसाव को भी पुरी तरह से रोकना होगा। कारों या मशीनों से हो रहा तेल का रिसाव भी जल प्रदूषण के प्रमुख कारणों में से एक है। इस वजह से कारों और मशीनों की देखभाल बेहद जरूरी है। काम पुरा होने के बाद खास कर जिन फैक्ट्रीयों और कारखानों में तेल का इस्तेमाल होता है, खराब तेल को साफ करना या सुरक्षित निपटारा आवश्यक है।

#### नालियों की सफाई :

जल प्रदूषण रोकने के लिए नालियों को नियमित रूप से साफ किया जाना आवश्यक है। ग्रामीण क्षेत्रों में पक्की नालियों का निर्माण आवश्यक है क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में पानी मनमाने ढंग से इधर उधर बहते हुए अंत में टनों के हिसाब से कचरा एवं प्रदूषक पदार्थ अपने साथ बहाकर नदियों एवं नहरों में ले जाते हैं। हमें नालियों को जल के स्रोतों से दूर रखने के लिए एक प्राद्योगिकी विकसित करनी चाहिए।

#### जल का पुनर्चक्रण एवं पुनरु उपयोग :

जल प्रदूषण को रोकने के कुछ अन्य तरिकों में जल का पुनर्चक्रण एवं पुनरु उपयोग भी सम्मिलित है और इनसे स्वच्छ एवं मिठे जल की उपलब्धता सुनिश्चित करने में मदद मिलती है। कम गुणवत्ता वाले जल जैसे कि गंदे पानी को शोधित करने के पश्चात प्राप्त जल को हम उद्योग में, बर्तन धोने या बागवानी आदि कार्यों में इस्तेमाल कर सकते हैं और इस प्रकार स्वच्छ जल को इन कार्यों द्वारा दुषित होने से बचा सकता है। शोधित जल को हम वाहनों की धुलाई के कार्य में भी इस्तेमाल कर सकते हैं। हमें स्वच्छ एवं मीठे जल का इस्तेमाल सिर्फ पीने के लिए करना चाहिए। वर्तमान में जल का पुनर्चक्रण सीमित परिणाम में ही किया जा रहा है। इसलिए हमें जल प्रदूषण को रोकने के उचित पुनर्चक्रण एवं पुनरु प्रयोग पर अधिक जोर देना होगा।

### मिट्टी के कटाव ही रोकथाम :

जल को प्रदुषित होने से बचाने के लिए मिट्टी का कटाव रोकना भी आवश्यक है। हमें मिट्टी के कटाव को रोकने के लिए और अधिक पेड़ पौधे लगाने होंगे। हमें इस तरह के तरीके अपनाने होंगे जिनसे मिट्टी का कटाव रुके एवं पर्यावरण के स्वास्थ्य में सुधार लाया जा सके।

### स्वच्छ भारत अभियान को सफल बनाएँ :

स्वच्छ भारत को पुरी समग्रता से लागू करने के लिए भारत को पुरी तरह से खुले में शौच से मुक्त बनाना आवश्यक है। वर्तमान में, सार्वजनिक स्थानों में कचरे को जहाँ-तहाँ फेंकना एवं खुले में शौच की समस्या बदनस्तुर जारी है। जब बारिश होती है तो ये सभी अपशिष्ट एवं मलमुत्र नदियों या तालाबों में जा मिलते हैं और इस प्रकार जल के स्रोतों को प्रदुषित कर देते हैं। लोग खुद भी उचित जल निकासी की व्यवस्था के अभाव में नदियों एवं तालाबों में अपशिष्ट पदार्थ प्रवाहित कर देते हैं।

तालाबों और नदियों को इस्तेमाल स्नान एवं कपड़े धोने के उद्देश्य से भी बड़े पैमाने पर होता है और जिसकी वजह से गंदगी और प्रदुषण की बड़ी मात्रा जल के स्रोतों में जमा हो जाता है। ऐसी ही अन्य गतिविधियों की वजह से कचरा, मल-मुत्र, मृत शरीर पुराने कपड़े और अन्य गंदी सामग्रिया तथा राख आदि नदियों में प्रवाहित हो जाते हैं। शहर में रिहाईशी क्षेत्रों के आसपास झुग्गी-झोपडियों एवं बस्तियों में

शौचालयों की कोई उचित व्यवस्था नहीं होती है और यह स्थिति हमें स्वच्छ भारत के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सच्ची भावना से प्रयास करने की आवश्यकता को दर्शाता है।

### निष्कर्ष :

जल प्रदुषण इस ब्रम्हांड में सभी प्रकार के जीवन के लिए खतरनाक है। प्रदुषितजल द्वारा कई बिमारियां फैलती है। मनुष्य पौधो और अन्य प्रकार के जीवों की रक्षा के लिए जल प्रदुषण का समाधान निकालना आवश्यक है और इसके लिए सभी लोगों, समाज एवं सरकार द्वारा सामुहिक रूपसे प्रयास किया जाना आवश्यक है।

### अवलोकनिय संदर्भ :

- 1) *Environment Assessment| Country Data : India The World Bank- 2011-*
- 2) *पर्यावरणीय समस्याएं विधी और प्राद्योगिकी रु एक भारतीय परिप्रेक्ष्य रमेश चंद्रप्पा और रवि, डी. आर. रिसर्च इंडिया प्रकाशन, दिल्ली, 2009.*
- 3) *जनसंख्या संदर्भ ब्यूरो, 2001.*
- 4) *नैशनल ज्योग्राफिक सोसाईटी, 1995.*
- 5) *पानी रु आशा की एक कहानी.*